UP Board Notes Class 7 Hindi Chapter 6 गीतामृतम् (अनिवार्य संस्कृत)

यद् यदाचरति ..... लोकस्तदनुवर्तते ॥1॥

हिन्दी अनुवादः
जैसा श्रेष्ठ लोग आचरण करते हैं, वैसा ही और दूसरे लोग करते हैं। वह जो प्रमाण प्रस्तुत करते हैं, लोग उनका अनुकरण करते हैं।

चञ्चलं ..... सुदुष्करम् ॥2॥

हिन्दी अनुवादः
हे कृष्ण! मन चंचल, मन्थन करने वाला और दृढ़ है। इसका निग्रह करना वायु को निग्रह करने के समान कठिन कार्य है।

काम एष क्रोध ..... वैरिणम् ॥3॥

हिन्दी अनुवादः
रजोगुण से उत्पन्न काम और क्रोध महान शत्रु और पापात्मा है। इसको ही संसार का वैरी जानो।

त्रिविधं ..... त्रयं त्यजेत् ॥4॥

हिन्दी अनुवादः
आत्मा का नाश करने वाले नरक के तीन द्वार काम, क्रोध और लोभ हैं। इसलिए इन तीनों को छोड़ देना चाहिए।

सर्वधर्मान् ..... मा शुचः ॥5॥

हिन्दी अनुवादः
हे अर्जुन! सारे धर्मों को छोड़कर मुझ एक ईश्वर की शरण में आ जाओ। मैं तुझे सब पापों से मुक्ति दे दूंगा। इसलिए शोक मत करो।

https://www.evidyarthi.in/